International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 5.143, Volume 02, No. 02, April - June, 2020, pp.175-179

vkjaxkckn ftyk ¼fcgkj½ esa i;ZVu m|ksx dk fodkl ,oa lEHkkouk;sa% ,d Hkkxksfyd v/;;u

डॉ अभय चन्द्र चंचल*

प्रस्तावना

औरंगाबाद जिला दक्षिणी बिहार में मगध प्रमण्डल का पश्चिमी भाग है। इस जिला का विस्तार 24^0 29′ से 25^0 7′ उतरी अक्षांस तथा पश्चिम से पूर्व 84^0 0′ 3′′ पूर्व देशान्तर से 84^0 44′ 50′′ पूर्व देशान्तर के मध्य स्थित है। इस जिला की पश्चिमी सीमा सोन नदी द्वारा निर्धारित होती है, जो एक प्राकृतिक सीमा है। इसके द्वारा पश्चिम में स्थित रोहतास जिला औरंगाबाद से अलग होता है। पूर्व में गया, उत्तर में जहानाबाद एवं दिक्षिण में पलामु जिला द्वारा सीमा वद्ध है। राष्ट्रीय राज पथ संख्या–2 तथा गैन्ड कार्ड लाइन इस जिले से होकर गुजरती है। इसका कुल क्षे0 3302.80 वर्ग कि0मी0 है। इसके अन्तर्गत दो अनुमण्डल औरंगाबाद और दाउदनगर है, तथा !! विकास खण्ड है। जिले की कुल आवादी 2001 में 20,13,055 व्यक्ति थी जो 2011 में बढ़कर 25,11,243 व्यक्ति हो गई है। नगरी की संख्या 3 है। औरंगाबाद सबसे बड़ा शहर है।

मुख्यतः पर्यटन अर्थशास्त्र से संबन्धित शब्द है जोकि एक उद्योग का द्योतक है। यह एक आर्थिक–समाजिक क्रिया है। अन्य आर्थिक क्रियाओं की तरह इससे मांग की उत्पत्ति होती है तथा अन्य उद्योगों के लिए बाजार प्रदान करती है। पर्यटन शब्द के अन्तर्गत वे समस्त व्यापारिक क्रियाएँ सम्मिलित हैं जो कि यात्रियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है।[1]

पर्यटन आज विश्व का सबसे बड़ा एवं सबसे तीव्र गति से विस्तार करने वाला उद्योग है। इसके विस्तृत बाजार का सीकांकन नहीं किया जा सकता।[2] यूनाइटेड चैम्बर्स ऑफ कामर्स के अनुसार, किसी भी क्षेत्रीय प्रान्तीय या सामुदायिक विकास कार्यक्रम के लिए पर्यटन की उत्रति एक मुख्य संचालन है।′′[3]

i;ZVu ,d Jfed

कृत उद्योग है और अन्य साधारण उत्पादक उद्योग की तुलना में कई गुना अधिक रोजगार प्रदान करता है, कितनी ही प्रकार व्यापारिक कम्पनियां जैसे होटल, रेस्तरां, ट्रेवेल एजेन्ट्स, टूर ऑपरेटर्स, उपहार विक्रय केन्द्र, परिवहन आदि पर्यटन का एक बड़ा अंश अर्जित करता है। पर्यटन विस्तार के समर्थक पर्यटन द्वारा अर्जित विदेशी मुद्रा की तरफ इशारा करते हैं। पर्यटन ही एक ऐसा निर्यात व्यापार है, जो बिना राष्ट्रीय संसाधन का ह्रास किए और वास्तविक तौर पर माल का निर्यात किए बिना एक बहुत बड़ी विदेशी मुद्रा अर्जित करता है। एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि ′′पर्यटन, एक बिना धुयें वाला उद्योग है जो पर्यावरण को सुरक्षित करने का एक पर्यायवाची है।′′[4]

पर्यटक–यात्रियों के दो प्रकार होते हैं– अन्तर्राष्ट्रीय यात्री एवं आन्तरिक (या देशी) यात्री । विदेशी यात्री जोकि अपने देश के बाहर की यात्रा करते है, वे अपना समय में पर्यटक स्थलों के ढूढ़ने में व्यतीत करते हैं। सुन्दर दृश्य एवं आकर्षण उनके लिए नवीनतम चींजे है।

आन्तरिक या स्वदेशी पर्यटक वे हैं जो कि अपने ही देश में भ्रमण करते हैं, ये अपने सम्पूर्ण ठहरने की अवधि के लिये प्रायः पूर्व निर्धारित स्थान पर जाते हैं, सामान्यतया ये यात्री या तो रेल या हवाई परिवहन प्रयोग करते हैं, आमतौर पर जो जगह– जगह भ्रमण करते हैं, वे मोटरिष्ट होते है।[5]

6 एम.ए., पी.,एच.डी. भूगोल विभाग, म. वि. वि., बोधगया, बिहार।

i;Vu dk izdkj

अब पर्यटन के अनेक प्रकार हो गये है जैसे इको टूरिज्म, एतिहासिक पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, विरासत पर्यटन स्वास्थ्य पर्यटन ग्रामीण पर्यटन इत्यादि।

v/;;u dk egRo

बिहार के बँटवारे के बाद बिहार में विद्यमान अनेक पर्यटन संभावनाओं को विकसित कर पर्यटन का काफी विकास किया जा सकता है। इससे इस राज्य का पर्याप्त आर्थिक विकास संभव है। विदेशी मुद्रा प्राप्त होगा। रोजगार मे वृद्धि होगी, सांस्कृतिक एवं समाजिक आदान–प्रदान से विश्व बन्धुत्व की सद्भावना बढ़ेगी। पर्यटन के विकास से संबंधित साधनों एवं सुविधाओं के विकास से उस प्रदेश का भौगोलिंक विकास –नगरीकरण, यातायात के साधानों, सांस्कृतिक–मिश्रण, भूमि उपयोग में अन्तर आदि परिवर्तन होंगे।[7]

nso

देव औरंगाबाद जिला में स्थित है। यह औरंगाबाद शहर से लगभग 10 किलोमीटर दक्षिण –पूर्व में जी0 टी0 रोड से 3 कि0 मी0 हटकर स्थित है। गया से औरंगाबाद जाने पर सड़क के बायें किनारें पर देव का भव्य प्रवेश द्वार दिखाई पड़ता है। यह स्थान सूर्य मंदीर के लिए प्रखयात है।[8] देव धार्मिक पर्यटन केन्द्र के अन्तर्गत आता है।

nso dk lw;Z eafnj

धार्मिक आस्था की अटूट परंपरा से जुड़ा सूर्य उपासना के लोकपर्व 'छठ'' के अवसरपर बिहार के औरंगाबाद जिले की देव में लाखों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं। यह कहना उचित होगा की प्राचीन कालीन सूर्य मंदिर के कारण ही यह नगर आज प्रदेश व उसके बाहर भी प्रसिद्ध है। छठ पूजन की परंपरा सदियों पुरानी है। सुर्य षष्ठी व्रत को लेकर यहाँ लगने वाले मेले की तैयारी में प्रशासन से साथ ही स्थानीय लोग भी उत्साह के साथ जुट गये हैं।

धर्म और संस्कृति को एक सूत्र में पिरोता देव का एतिहासिक एवं पौराणिक सूर्य मंदिर प्रत्येक वर्ष कार्तिक एवं चैत माह में लाखों श्रद्धालुओं एवं आगंतुकों के आकर्षण का केन्द्र बन जाता है। यहाँ छठ व्रत करने का महात्म इसलिए भी बढ़ जाता है कि भगवान भाष्कर का यही एक मात्र मंदिर है जिसका दरवाजा पूर्वाभिमुख न हो कर पशिचमभिमुख है। सूर्य षष्ठी व्रत का विधान है कि प्रथम आर्ध्य अस्ताचलगामी भगवान भास्कर को ही दिया जाता है। ऐसा माना जाता है कि यहाँ अराधना करने वाले प्रत्येक श्रद्धालुओं की मनोकामना पूर्ण होती है। ''साम्ब पुराण'' के अनुसार देव का सूर्य मंदिर राजा साम्ब द्वारा भारत में निर्मित ग्यारह मंदिरों में से एक है। वहीं वाण पत्नी की कथा एवं द्रौपती द्वारा देव में सूर्य षष्ठी करने की कथा धार्मिक एवं पौराणिक महत्व को बढ़ा देती है। देव का प्रसिद्ध सूर्य मंदिर अपनी परंपरागत कहनीके दर्पण में आज भी उतना ही महत्वपुर्ण है जितना पहले था । काले पत्थरों को तराश कर निर्मित यह मंदिर अपनी मनोरम छटा के लिये जाना जाता है । मंदिर निर्माण के विषय में मुख्य द्वार पर ब्राह्म लिपी में लिखित एक संस्कृत में अनुवादिक श्लोक ''व्याम नमोः आमं वृषं दांडच्यों चियितु सौम्या दिलाया भव यस्या सितं स निराधिप प्रभुनया लाको विशोको भविशः'' के अनुसार बारह लाख सोलह हजार वर्ष त्रेता गुजर जाने के पश्चात् इलापुत्र पूरखा आयल ने इसको निर्माण कराया था। शिलालेख सेपता चलता है कि सन् 2019 तक इस मंदिर का निर्माण काल दो लाख उनहतर वर्ष हो गया। विचित्रताओं को समेटे त्रेतायुगीन सूर्य मंदिर में आकर्षणशील और ज्यामितिक संरचना से भक्ति भावना जागृत होती है। इस मंदिर संबंधित वैसे तो कई किंवदेती है परंतु दिल्ली के शासक औरंगजेब से संबंधित जनश्रुति काफी प्रचलित है। कहा जाता है कि विभत्र स्थानों में मंदिर मूर्तियों को तोड़ता हुआ औरंगजेब देव पहूँचा, देव स्थित सूर्य मंदिर को तुड़वाने एवं उखाड़ने का प्रयास किया तो श्रद्धालुओं ने इस मंदिर का महात्म बताते हुए औरंगजेब को ऐसा करने से मना किया। श्रद्धालुओं की बात सुन औरंगजेब ठहाका लगाया और कहा कि अगर सही मायने में इस भगवान में शक्ति है तो रात भर में मंदिर का प्रवेश द्वार पूरब से पश्चिम हो जाये तो इस सत्यता के आगे नत मस्तक हो जाऊँगा। कहा जाता है कि रात भर में दरवाजा पूरब से पश्चिम हो गया जो

आज भी विद्यमान है। मंदिर का गर्भ गृह व शिखर जहाँ बेहद व अलंकृत है। ऐतिहासिक स्थल देव का सर्वाधिक रोचक तथ्य यह है कि हजारों वर्ष पुरानी पूजन परंपरा यहाँ आज भी मूलरूप में है तथा इस पर कालबद्ध परिवर्तन व आधुनिकता का छाप नहीं पड़ी है जो अन्य सभी त्योहारों व उत्सवों में हमारे समाज में दृष्टिगत होती है। धार्मिक गरिमा और महिमा के इस स्थलों को कोर्णाक एवं खजुराहो के सूर्य मंदिरों से भी अच्छी स्थिति में लाने का प्रयास चल रहे हैं तथा राजगीर एवं बुद्ध महोत्सव के तर्ज पर 'सूर्य महोत्सव' देव स्थान की महिमा के प्रचार तथा प्रसार के लिए मनाया जाता है।

rkfydk 1% rhFkZ;k=h&i;ZVdksa dk vkxeu 2006&2019 rd

Ø- l-	o"kZ	dqy rhFkZ;k=h	of) ¼$½ á l ¼&½	ifr'kr
1.	2006	85.710	.....	.....
2.	2007	88,011	+ 2,301	+ 2.68
3.	2008	89,791	+ 1,780	+ 2.02
4.	2009	85,071	− 4,220	− 4.70
5.	2010	89,910	+ 4,839	+ 5.69
6.	2011	96,790	+ 6,880	+ 7.85
7.	2012	1,07,801	+ 11,011	+ 11.38
8.	2013	1,31,308	+ 23,507	+ 21.81
9.	2014	1,40,011	+ 8,703	+ 6.63
10.	2015	1,45,911	+ 5,900	+ 4.21
11.	2016	1,51,910	+ 6,899	+ 4.73
12.	2017	1,63,990	+ 6,080	+ 4.00
13.	2018	1,71,804	+ 7,814	+ 4.76
14.	2019	1,77,011	+5,207	+ 3.03
	2006–2019	....	91,361	+ 106.52

स्त्रोतः– (क) टूरिस्ट इनफोरमेशन ऑफिस एवं डिस्ट्रिनिशट्रेशन, औरंगाबाद।

(ख) स्थानीय अनुमान एंव

(ग) स्वयं का पर्यवेक्षण तथा आकलन,

नोटः– यह वार्षिक संख्या है जिसमें वर्ष में दो बार छठ–पर्व के अवसर पर आनेवाले लोग भी सम्मिलित है।

l;kikluk dk ikphu dsUnz gS nsodq.M

अरवल व औरंगाबाद जिले की सीमा पर स्थित देवकुण्ड प्राचीन काल से सूर्यापासना का महत्वपूर्ण केन्द्र रहा है। इस स्थान पर भगवान शिव का एक प्राचीन मंदिर भी है। जो 'दुधेश्वर नाथ मंदिर के नाम से विख्यात है। मंदिर के समीप ही एक पवित्र सरोवर है जहाँ छठ व्रत के अवसर पर भगवान भास्कर को अर्ध्य देने के लिए लाखों की संख्या में भक्तगण आते है।

पुराण की कथाओं के अनुसार देवकुण्ड में 'च्यवन ऋषि' तपस्या रत थे। एक बार 'राजर्षि गय जिन्होने गया नामक प्राचीन शहर की स्थापना की थी ने अश्वमेघ यज्ञ का आयोजन किया। इसमें भाग लेने पहूँचे महार्षि च्यवन जिन्होने उस समय को 'कीकट देश' (वर्तमान मगध) की व्यापक यात्रा की। यात्रा के दौरान ही उन्होने सिद्धवन' को पाया जो सोनभद्र और पुनपुन के बीच स्थित था । उस समय सिद्धवन 'सिद्धवंश के ऋषियों का निवास था। महर्षि च्वयन इस स्थान के आधयात्मक, शांत और सौम्य वातावरण से प्रमाणित हुए। वृक्षों और पेड़ो से आच्छादित यह प्रदेश उन्हें तपस्या स्थल के अनुकूल भाया और उन्होंने वहीं तपस्या करने की सोची। तपस्या में बहुत दिनों तक एक आसन से बैठने के कारण उनका शरीर दीमक द्वारा एकत्रित मिट्टीयों से ढक गया,

लेकिन उनकी आँखों से जुगनू की तरह प्रकाश निकलता रहा। इसी दौरान 'राजा श्रयाति' अपनी पुत्री 'सुकन्या के साथ उस स्थान पर आये, जहाँ महार्षि च्यवन तपस्या में लीन थे। सिद्धवन में राजकुमारी सुकन्या की दृष्टि मिट्टी के टीले पर पड़ी, जिससे प्रकाश पूंज निकल रहे थे। वास्तव में वह महिर्ष की आँख थी। सुकन्या ने उत्सुकतावश आँखों में काँटा गड़ा दिया जिसमें से खून बहने लगा। जल्द ही राजा के काफिले ने इस घटना के बाद शरीरिक वेदना महसूस की । अनुभवी राजा ने ताड़ लिया कि महर्षि को कष्ट हुआ है। अंत में सुकन्या ने सारी बातें राजा को सुनायी और अपनी गलती स्वीकारी। उसकी प्रार्थना से प्रसत्र होकर महर्षि च्यवन ने राजा को क्षमा कर दिया। बदले में राजा ने सुकन्या का हाथ महर्षि के हाथों में देने का प्रस्ताव रखा, जिसे च्यवन ने शीध्र स्वीकार कर लिया । सुकन्या की पतिव्रत धर्म पालन को देख नाग कन्यओं ने उन्हें सूर्य षाष्ठी व्रत करने की सलाह दी ताकि उनके पति का शरीर युवा की तरह हो जाय। इसी व्रत के प्रभाव से कुछ समय बाद औषधिदेव दोनों अश्विनी कुमार च्यवन के आश्रम पर पधारे। उन्होने सुकन्या से वरदान मांगने को कहा। सुकन्या के शरीर को युवा की तरह बना देने का वर मांगा। इस पर अश्विनी कुमारों ने महर्षि को अपने एक कुंड में ले जाकर स्नान करवाया।

चमत्कार स्वरूप, महर्षि की जर्जर काया देदीप्यमान और प्रकाशमय जवान मनुष्य के रूप में बदल गयी। देवकुण्ड स्थित सरोवर अश्विनी कुमारों द्वारा निर्मित माना जाता है। च्यवन आश्रम की आगे चलकर देवकुंड के नाम से विख्यात हुआ। वर्तमान में मंदिर का प्रबंधन एक मठ के जिम्में है । मुगल साम्राज्य के दौरान बेलखारा के राजा यशवंत सिंह ने मठ को 300 बीधा जमीन जागीर के रूप में दी थी।

योगीराज बाबा बालपुरी मठ के पहले महंथ और संस्थापक थे। दान से संबंधित कागजात अभी मठ में सुरक्षित है जो फारसी लिपि मं लिपिबद्ध है। यह विडंबना ही है कि एक समय में देवताओं का निवास स्थान रह चुका यह देवकुण्ड अपराध और उग्रवाद की शरण स्थली बना हुआ है, जिस स्थान को एक आदर्श पर्यटक स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता था, वह आज बिल्कुल उपेक्षित है।[9]

leL;k,¡

l;! egkRlo e turk d i l dk n:i;kx

सूर्य महोत्सव के आयोजन में जनता के पैसे का दूरूपयोग किया गया है। महोत्सव के आयोजक, महोत्सव के उद्देश्यों को भूल कर खास व्यक्ति और को महिमामंडित करने में लगे रहते हैं।

विकास केन्द्र के सचिव सह जिला पार्षद ने बताया कि देव महोत्सव के आयोजन के पीछे देव और सूर्य भगवान की एंतिहासिक गरिमा तथा धार्मिक महिमा को सर्वत्र प्रसारित और प्रचारित करना था। जिले की सभ्यता और संस्कृति की अच्छाईयों को आम जन जन तक पहूँचना था। परंतु सूर्य महोत्सव धार्मिक महिमा को बढ़ाने के बजाय खास व्यक्ति को महिमामंडित करती दिखी। जिला पार्षद सिद्धेश्वर विद्यार्थी ने कहा कि जन विकास परिर्षद के तत्वाधान में 1992 से 199 तक आयोजित महोत्सव में इन बातों का ध्यान रखा जाता था। श्री विद्यार्थी ने कहा जब से इन महोत्सव का अधिग्रहण पर्यटन विभाग द्वारा कर लिया गया तब से सरकारी आयोजक महोत्सव के उद्देश्यों को भूल कर एक खास राजनीतिक दल और उसके नेता को महिमामंडित करने में लगे हैं। इतना ही नहीं स्थानीय कलाकारें को महोत्सव में तवज्जो नहीं दिया जाता है जबकि जिले में कई महत्वपूर्ण कलाकर हैं। सूर्य महोत्सव में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम को आर्केसट्रा का रूप दे दिया गया जो निंदनीय है। साथ ही आवागमन की असुविधा, पेय जल, सफाई की असुविधाओं के साथ ही विधि–वयवस्था कमजोर दिखती है।

fu"d"k

बिहार के बँटवारे के बाद, शेष बिहार जो पर्यटन–संसाधन से काफी धनी है तथा वहाँ इस उद्योग के विकास का पर्याप्त संभावनाएँ है, इन धार्मिक केन्द्रों को और भी विकसित तथा व्यवस्थित कर लाखों पर्यटकों को आकृष्ट किया जा सकता है।

lanHk xUFk lph

1. शर्मा, संजय कुमार (1998) पर्यटन और पर्यटन उत्पाद (नई दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन), पृ0 सं0 2
2. बतरा, जी0 एस0 (1996) टूरिज्म इन दी टवन्टी–फस्ट सेन्चुरी (नई दिल्ली, अनमोल पब्लिकेशन, प्राइवेट लिमिटेड), पृ0 सं0 1
3. नेगी, जगमोहन, (1999) पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धांत,(नई दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन), पृ0 सं0 31
4. रोबिनसन, एच0 (1978) ए ज्याग्राफी ऑफ टुरिज्म, (मैकडोलान्ड एण्ड इभान्स), पृ0 सं0 XXIII
5. नेगी, जगमोहन, (1998) पर्यटन– मार्केटिंग एवं विकास, (नई दिल्ली तक्षशिला प्रकाशन) पृ0 सं0 33
6. सेन्सस ऑफ इण्डिया, 2011
7. रोबिनसन, एच0 संदर्भ 4.....
8. चौधरी, पी0 सी0 राय, डिस्ट्रिक्ट गेजेटीयर्स– गया, (पटना, सेक्रेटारियट प्रेस),
9. पाण्डेय, मनोज, आकर्षक शिल्प व प्राचीन परम्परा का प्रतीक है देव का सूर्य मंदिर, दैनिक जागरण, पटना से निष्कासित 14 नवम्वर 2007

❖◆❖